भारतीय चिंतन के आधार स्तंभ आचार्य शंकर

बलजीत बिहारी

प्राचीन भारतीय चिंतन में निहित आधारभूत तत्व हमारी संस्कृति और संस्कार में निरंतर बना हुआ है। वर्तमान समाज में विपथगमन का मूल कारण उन मूल्यों से वेगानगी या उनका अनुचित व्याख्या है। हमारा न केवल वर्तमान, बल्कि भविष्य उन अतीत के आधार स्तम्भ पर टिका है। हम उन आदर्श चिंतनों से बच कर नहीं निकल सकते जो वेदों, अरण्यकों, उपनिषदों तथा इनकी ही व्याख्या या आलोचना के कारण विकसित हुई। आदि शंकराचार्य की महत्ता इसलिए है कि उन्होंने सभी धाराओं का उचित व्याख्या कर एक समंवित ;बवउचवेपजमद्ध रूप प्रदान किया। यही कारण है कि शंकराचार्य के चिंतन में आस्तिक–नास्तिक, भौतिक–अध्यात्मिक, रूढ़िवादी–प्रगतिवादी जैसे विरोधी विचार एक साथ मिलते हैं। प्रशंसकों ने उन्हें वेदांत के शीर्ष आचार्य माना तो आलोचकों ने छद्म बौद्ध कहा, परंतु गौर से देखा जाए तो यह द्वंद्व दो विरुद्धों के सामंजस्य के रूप में वैदिक काल से ही निरंतर बना हुआ है। जिससे न तब के आचार्य बच पाए और न आज के! अतः इसका एक ऐतिहासिक अध्ययन आवश्यक हो जाता है।